VIVEK RESEARCH E-JOURNAL, Vol. VII, SPECIAL ISSUE NO. 1, MARCH, 2023 ISSN : 2581-8848

विशेष अंक

मार्च, 2023

साहित्य में अदिवासी और पर्यावरण विमर्श

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. प्रदीप पाटील

डॉ. स्वप्निल बुचडे

संपादकीय

साहित्य का दायरा असीम है। वह जीवन और जीवनेतर से संबंधित सबकुछ को अपने में समाहित कर लेता है। हर दौर में साहित्य की भूमिका बदलते रहती है। वर्तमान समय में साहित्य में अस्मिता मुलक विमर्श के अंतर्गत मनुष्य की अस्मिता से जुड़े सवालों को तरजीह दी जा रही है। साथ ही मुख्यधारा से परे हाशिए पर सिमटते जा रहे भाषा, धर्म, लिंग, वर्ण, जाति, समुदाय आदि विषयों को मुख्यधारा में वापस लाने की कवायद चल रही है। इसी की एक कड़ी आदिवासी एवं पर्यावरण विमर्श है।

वैश्वीकरण ने पूरे समुचित विश्व को बदल दिया है। दुनिया ने विश्वग्राम की जो संकल्पना देखी वह साकार हो गई। भूमंडलीकरण के चलते बदलाव की धारा पूरे विश्व भर में प्रवाहित हुई, जिसने विकास के नाम पर विश्वभर में पैर फैलाए। सन् 1991 के बाद विकास की यह धारा भारत तक पहुँची। विकास के नाम पर उदारीकरण एवं मुक्त व्यापार की चपेट में भारत के मूल निवासी या कहें आदिवासी आ गए। आदिवासीयों ने आदिम काल से जंगल को अपना घर समज उसे सहज कर रखा था। औद्योगिक विकास के नाम पर अहिस्ता-अहिस्ता आदिवासियों का दोहन की कहानी शुरू हो गई। औद्योगिक विकास से संबंधित सारे संसाधन इन्हीं आदिवासियों के जल, जमीन, जंगल में मौजूद थे जिसके चलते आदिवासियों की जमीन को अधिग्रहित कर उन्हें हासिल करने का सिलसिला शुरू हो गया। आदिवासियों की जल, जमीन, जंगल को अधिग्रहित करना वास्तविकता में उनके मूल अधिकारों के हनन तक पहुँचा जिसके चलते संघर्ष की चिंगारी ने जन्म लिया। अपनी ही मस्ती में जीने वाले इन आदिम जनजातियों के जीवन में नव नवीन समस्याओं ने दस्तक दी। इस संघर्ष ने ही उनकी अस्मिता को चकनाचूर करने के साथ उनकी आदिवासियत को खतरे में डाला।

भारत में पर्यावरण संरक्षण दो स्तरों पर ज्यादातर क्रियाशील दिखाई देता है। एक सरकारी प्रयास एवं सामाजिक संस्थानों के द्वारा किया जाने वाला कार्य और दूसरा आदिवासियों के संघर्ष में, जिनके लिए प्रकृति सब कुछ है आदिवासी समुदाय को उनके जल, जंगल और जमीन से परे सोचा ही नहीं जा सकता। यह समुदाय सदियों से प्रकृति का रक्षक रहा है पर्यावरण संरक्षण, जलवायु की नियमितता, संधारणीय विकास आदि पर्यावरण से जुड़े सभी चीजों में आदिवासी का मुख्य योगदान रहा है। यह समुदाय प्रकृति की और उसमें पलने वाले को अपने परिवार का सदस्य मानता है। विकास के इस दौर में इन दोनों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा। विकास के रास्ते पर अग्रसित रहते हुए इनकी अस्मिता को कैसे बचाया जाए इसी पर विचार मंथन प्रस्तुत विशेषांक में किया गया है। प्रस्तुत अंक में व्यक्त विचार शोधकर्ता के अपने हैं संपादक इससे सहमत हो ये जरूरी नहीं।

-

अतिथि संपादक
डॉ. आरिफ महात

अनुक्रम

Sr. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	हिंदी आदिवासी साहित्य का स्वरूप, चुनौतियां और संभावनाएं	डॉ. अशोक मोहन मरळे	1-3
2	आदिवासी कविता में व्यक्त प्रकृति चिंतन	डॉ. आरिफ शौकत महात	4-7
3	संजीव की कहानी 'अपराध': अपराध के सांचों में कैद बेगुनाही की दास्तां	डॉ. दिपक जाधव 'अक्षर'	8-13
4	संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी चेतना	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर	14-16
5	आदिवासी अधिकार हनन की दूब: पाँव तले की दूब	डॉ. दीपक रामा तुपे	17-19
6	आदिवासियों की दमित दासताँ : 'आदिवासी नहीं नाचेंगे'	डॉ.प्रवीणकुमार न. चौगुले	20-24
7	हिंदी में अनुदित कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन	डॉ. विनायक बापू कुरणे	25-28
8	आदिवासी नारी के जीवन को तबाह करती अंधविश्वास की 'डायन'	डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर	29-31
9	डॉ. अनूप वशिष्ठ के गजलों में पर्यावरण विमर्श	डॉ. अलका निकम-वागदरे	32-35
10	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	1. प्रा. डॉ. नाजिम इसाक शेख 2. अश्विनी जगदीप थोरात	36-39
11	''मरंग गोडा नीलकंठ हुआ'' उपन्यास में विस्थापन तथा प्रदुषण विमर्श	प्रोफेसर डॉ. साताप्पा शामराव सावंत	40-42
12	"हिंदी के स्वातंत्र्योत्तर पहाडी आंचलिक उपन्यासों में चित्रित उत्सव पर्व त्यौहार"	प्रा. डॉ. मनीषा बाळासाहेब जाधव	43-48
13	समकालीन कविता में पर्यावरण प्रदूषण	डॉ. आर. पी. भोसले	49-51
14	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	प्रा. डॉ. एम. ए. येल्लुरे	52-53
15	जनजाति समाज और पर्यावरण के संबंध का भौगोलिक अध्ययन	डॉ. संदीप रुपरावजी मसराम	54-57
16	''सुमित्रानंदन पंत का काव्य पर्यावरण चेतना के परिप्रेक्ष्य में''	डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील	58-59
17	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	डॉ. संतोष बबनराव माने	60-62
18	आदिवासी संवेदनाओं की दास्तां: 'जंगल जहा शुरू होता है'	डॉ. संतोष तुकाराम बंडगर	63-66
19	अल्मा कबूतरी (उपन्यास) : कबूतरा आदिवासी जाति की यथार्थ दासता	श्री. नीलेश वसंतराव जाधव	67-68
20	आदिवासी समाज की समस्याएं 'काला पादरी' उपन्यास के संदर्भ में	डॉ. रीना निलेश खिचडे	69-72

21	हिंदी साहित्य में आदिवासी-विमर्श	प्रा. अपर्णा संभाजी कांबळे	73-75
22	गोस्वामी तुलसीदास एवं संत एकनाथ के साहित्य के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. सागर रघुनाथ कांबळे	76-77
23	डेराडंगर आत्मकथा में चित्रित आदिवासी समस्याएँ	कु. प्राजक्ता अंकुश रेणुसे	78-80
24	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	वैशाली राजेंद्र मोहिते	81-83
25	आदिवासी जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'ग्लोबल गांव के देवता'	प्रा.सारिका राजाराम कांबळे	84-85
26	स्वयंप्रभा : प्रकृति और मानव का अनंत संबंध	प्रा. रोहिता केतन राऊत	86-89
27	अनबीता व्यतीत उपन्यास में पर्यावरण चित्रण	श्रीमती प्राजक्ता राजेंद्र प्रधान	90-92
28	व्यवस्था केन्द्रित शोषण के खिलाफ विद्रोह की धधकती आग: 'एनकाउंटर'	प्रा. किशोरी सुरेश टोणपे	93-95
29	'तीर : 1993 : अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी वर्ष में' कहानी में आदिवासियों में शैक्षिक चेतना	श्री. सुरेश आनंदा मोरे	96-98
30	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	श्री.श्रीकांत जयसिंग देसाई	99-101
31	आदिवासी विमर्श : चिंतन, सृजन एवं सरोकार	माधुरी राजाराम चव्हाण (शिंदे)	102-105
32	"हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासी विमर्श"	श्री. सुभाष विष्णु बामणेकर	106-108
33	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	कामिनी जनार्दन मोहिते	109-110
34	'पांव तले की दूब' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएँ	प्रा. हणमंत परगोंडा कांबले	111-113
35	'स्वांग शकुंतला' के नाट्यगीतों का विश्लेषण और पर्यावरण	चन्द्र पाल	114-118
36	समकालीन कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श	कु. भाग्यश्री दादासाहेब चिखलीकर	119-120
37	सोशल मीडिया और पर्यावरणीय चिंता	अनिल विठ्ठल मकर	121-124
38	ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास में आदिवासी समुदाय की समस्याएँ	प्रा. अजय महेंद्र कांबळे	125-127
39	मधु कांकरिया के कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी समाज	आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी	128-130
40	पर्यावरण विमर्श: चिंतन, सृजन एवं सरोकार	श्री. आनंदराव आप्पासाहेब बेडगे	131-133
41	हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	सौ. अमिता प्रशांत कारंडे	134-136
42	हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासी विमर्श	सौ. अश्विनी अशोक देशिंगे	137-139